शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2014

हिन्दी पत्रकारिता में साहित्यकारों का योगदान

डॉ.रूपाली भारद्वाज
उज्जैन, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

हिन्दी पत्रकारिता को साहित्यकारों ने न सिर्फ समृद्ध किया, बल्कि उसे नयी उंचाईयां भी प्रदान कीं। आजादी के पहले कमोबेश साहित्यकारों ने पत्रकारिता के माध्यम से आमजन में आजादी का अलख जगाने का भागीरथ प्रयत्न किया। साहित्यकारों ने पत्रकारिता को साधना के रूप में अपनाया। वहीं आजादी के बाद साहित्यकारों ने लोगों में लोकतंत्र के प्रति आस्था कायम करने के लिए अपनी लेखनी चलायी। प्रस्तुत शोध पत्र में हिन्दी पत्रकारिता में साहित्यकारों के योगदान का मूल्यांकन किया गया है।

प्रस्तावना

मनुष्य अपने आसपास होने वाली घटनाओं के बारे में जिज्ञासु बना रहता है। उसकी जानने की यह इच्छा वर्तमान में विश्व की प्रमुख गतिविधियों तक बढ़ गई है। यह उत्कंठा जनसंचार के विविध साधनों से ही पूरी हो सकती है। "पत्रकारिता का अस्तित्व पौराणिक काल से है। देवता और दानव भी आसपास की जानकारी रखने की जिज्ञासा रखते थे, उनके बीच पत्रकार का कार्य नारद मुनि किया करते थे। हिन्दी पत्रकारिता का उदय उदंत मार्तंड समाचार पत्र से हुआ। हिन्दी गद्य के साथ हिन्दी पत्रकारिता को पल्लवित करने का श्रेय भारतेंदु हरिश्चंद्र को ही जाता है। "अंग्रेजों की शोषण नीति अत्यधिक बढ़ती जा रही थी। विभिन्न पत्रों ने उनके विरुद्ध आवाज उठाने का साहसिक कार्य किया।2 देश के उत्कर्ष-अपकर्ष के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों पर प्रकाश डालकर इस युग के साहित्यिक पत्रकारों ने जनमानस में राष्ट्रीय भावना के बीजवपन का महत्वपूर्ण कार्य किया। इस युग के प्रमुख साहित्यिक पत्रकारों में भारतेंदु जी, बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त आदि उल्लेखनीय हैं।

पत्रकारिता और साहित्यकार

साहित्य के दिशा-निर्देशक आचार्य के रूप में पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी का प्रादुर्भाव हुआ। हिन्दी को परिष्कृत, परिमार्जित, प्रौढ़, परिपुष्ट और प्रांजल बनाकर खड़ी बोली को काव्य की भाषा बना देने का श्रेय द्विवेदी जी एवं उनकी पत्रिका 'सरस्वती' को है। इस युग में द्विवेदी जी मुख्य साहित्यिक पत्रकार रहे इसलिए विद्वानों ने इसे द्विवेदी युग की संज्ञा दी। इस युग में जिन विद्वानों ने अपने कर कमलों से लेखनी चलाई उनमें महावीर प्रसाद द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, गणेश शंकर विद्यार्थी, देवकीनंदन खत्री हैं। इंदु का काव्यमय उद्देश्य इस प्रकार मुद्रित हुआ था, "सज्जन चितचकोरन को, हुलसावन भावनपूरो अनिंदु है। मोहनकाव्य के प्रेमिन के, हितसांच सुधारस को बलबिंदु है। ज्ञान प्रकाश प्रसारि हिये गिय, ऐसा मूरवता की मिलिन्हु है। काव्य महोदधित प्रकट्यो इस रीति कला युक्त पूरण इंदु है।3 अगले क्रम में गांधी युग का अवतरण हुआ। गांधी जी का प्रभाव चारों ओर दिखाई दे रहा था। हिन्दी पत्रकारिता भी गांधीजी के प्रभाव से अछूती नहीं रही। इस युग में प्रेमचंद, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, पाण्डेय बेचैन शर्मा उग्र, शिवपूजन सहाय आदि ऐसे साहित्यिक पत्रकार रहे, जिन्होंने अपनी लेखन कला के

साथ स्वतंत्रता के आंदोलन में भाग लिया इनकी लेखनी ही अंग्रेजी के विरुद्ध इनका हथियार थी। स्वातंत्र्य प्राप्ति के बाद देश को नवीन सृजन की आवश्यकता ने फिर पत्रकारिता को महत्वपूर्ण बना दिया। देश को समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणतंत्र बनाने और उसके सभी नागरिकों को सामाजिक और राजनैतिक न्याय दिलाने में पत्रकार कृतसंकल्पित थे। इस युग में सच्चिदानंद वात्सायन अज्ञेय, धर्मवीर भारती, त्रिलोचन, बालकृष्ण राव, कमलेश्वर, मोहन राकेश, राजेंद्र अवस्थी आदि कर्मठ पत्रकार रहे हैं। पत्रकारिता का यह अनवरत क्रम वर्तमान युग तक जारी है। सभी युगों की पत्रकारिता पर दृष्टि डालने पर हमें निम्न समानताएं दिखाई देती हैं: 1 सभी पत्रकार राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत दिखाई देते हैं।4

भारतेंदु युग से स्वातंत्र्योत्तर युग तक सभी ने राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करने का सफल कार्य किया। 2 सभी साहित्यिक पत्रकारों में एकनिष्ठ संकल्प दिखाई देता है। जो इनकी कर्म साधना-सा प्रतीत होता है। 3 सभी में कर्मठता और उच्च आदर्शवादिता के दर्शन होते हैं।5 कार्य के प्रति पूर्ण समर्पित होने के साथ ही आदर्शवान थे। कई बार आदर्शों के कारण उन्हें क्षति भी उठानी पड़ती थी। फिर भी वे आदर्श पथ से विचलित नहीं होते थे। 4 सामाजिक मूल्यों के उन्नयन का प्रश्न सदैव पत्रकारिता के समक्ष रहा चाहे, देवोत्तर संपत्ति का प्रश्न हो, चाहे गोवध हो, चाहे किसानों के दैन्य का प्रश्न, सभी सामाजिक हित के प्रश्नों पर समान रूप से ध्यान दिया। 5 इन सभी ने कभी भी अर्थ की चिंता नहीं की। लगभग सभी पत्रकारों को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा परंतु फिर भी वह विचलित नहीं हुए। 6 साहित्यिक पत्रकारों ने निर्भीकता और साहस के साथ समाज के गुण दोषों का आकलन किया।6 "यद्यपि इनमें कुछ विषमताएं भी दिखाई देती हैं। इन पत्रकारो की लेखन शैली भिन्न है। किसी ने तद्भव और प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया तो किसी ने ब्रज भाषा, खड़ी बोली को स्वीकार किया परंतु इनका उद्देश्य एक था समाज एवं राष्ट्र को विकसित करना। प्रारंभ में मुद्रण साधन सीमित थे एवं विषय भी संकुचित थे। परंतु धीरे-धीरे मुद्रण के साधनों का विकास हुआ और विषयों के क्षेत्र में भी वृद्धि हुई। वर्तमान में व्यापक विषयों का समावेश पत्रकारिता में हुआ। सभी पत्रकारों ने पत्रकारिता को साहित्य से जोड़ने का प्रशंसनीय कार्य किया। हिन्दी की विविध विधाओं जैसे नाटक, कहानी, उपन्यास, कविता को पत्रों में जगह दी। विद्वानों, कवियों के जीवन पर प्रकाश डाला गया। इसके साथ ही खड़ी बोली को प्रतिष्ठित किया गया। जहां सती प्रथा, बाल विवाह प्रथा, पर्दा प्रथा, बहुविवाह जैसी कुरीतियों पर तीव्र प्रहार किया वहीं कांग्रेस की गतिविधियों, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा, साइमन कमीशन का बहिष्कार आदि राजनैतिक गतिविधियों पर नजर रखी। स्वतंत्रता के बाद कई सुधारात्मक कार्य किए गए। राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए राजनेताओं ने पत्रों द्वारा ही मार्ग प्रशस्त किया। जिससे वे देश् का कुशल प्रतिनिधित्व कर सके।

पत्रकारिता एक महान् उद्देश्य को लेकर अवतरित हुई, विभिन्न युगों के साहित्यकारों ने उसे अपने अथक प्रयासों से सजाया और संवारा, फिर सर्वसाधारण लोक में उसका कार्य फलीभूत हुआ। सभी की कर्मठता, एकनिष्ठ संकल्प प्रशंसनीय है। वे अपने कार्य के प्रति समर्पित व ईमानदार थे। उन्होंने जीवन को नई धारा की ओर उन्मुख किया और यह क्रम वर्तमान युग तक अविराम गति से चल रहा है।

निष्कर्ष

वास्तव में सभी साहित्यिक पत्रकारों ने तर्क विधान विश्लेषण और आत्मविश्वास की गरिमा से युक्त रचनाधर्मी अनेक पत्र संपादित किए। जिसके द्वारा पाठकों को नयी भावभूमि मिली। ऐसे पत्रकारों की हिन्दी पत्रकारिता में श्रेष्ठ जगह सदा बनी रहेगी।

संदर्भ

1 दशा और दिशा, पल्लवी अग्रवाल, पृष्ठ 1, 2006

2 हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास, जगदीश चतुर्वेदी, पृष्ठ 50

3 हिन्दी पत्रकारिता - प्रेमचंद और हंस, डॉ..रत्नाकर पाण्डेय, पृष्ठ 44, 2006

4 हिन्दी पत्रकारिता का बृहद इतिहास, डॉ..अर्जुन तिवारी, पृष्ठ 309, 1997

5 वही, पृष्ठ 412-413

6 वही पृष्ठ 425-